Dr M.K. Jha
Dept of Sociology
V.S.J college, Rajnagar

B.A part-1
paper-1

sociology 'Hons'

question – सामाजिक नियंत्रण की अवधारणा एवं आवश्यकता पर प्रकाश डालिए।

Ans:- सामाजिक नियंत्रण से तात्पर्य अनेक नियमों और प्रथाओं की उस व्यवस्था से है जिसके द्वारा व्यक्ति के व्यवहारों को सामाजिक नियमों तथा समाज की प्रत्याशाओं के अनुरूप बनाया जाता है। नियमों के पालन की सीख, आग्रह और दबाव सामाजिक नियंत्रण का मुख्य आधार है। इस दृष्टिकोण से सामाजिक नियंत्रण की अवधारणा आत्म-नियंत्रण से अलग है।

अमेरिकन समाजशास्त्री E.A Ross सर्वप्रथम अपनी पुस्तक Social control में सामाजिक नियंत्रण की अवधारणा दिये। उनके अनुसार सामाजिक नियंत्रण का तात्पर्य उन सभी शक्तियों से है जिनके द्वारा समुदाय व्यक्ति को अपने अनुरूप बनाता है।

Brearly सामाजिक नियंत्रण का सम्बन्ध संगठित प्रयत्नों से है जो एक विशेष प्रकार का व्यवहार करने के लिए आग्रह एवं बाध्य करता है। नियंत्रण के द्वारा मान्यतापूर्ण, उपयोगी एवं व्यक्तित्वपूर्ण कार्य करने का अवसर प्रदान करता है।

MacIver and page के अनुसार "सामाजिक नियंत्रण का अर्थ उस तरीके से है जिससे सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था की एकता और उसका स्थायित्व बना रहता है। इसके द्वारा यह समस्त व्यवस्था एक परिवर्तनशील सन्तुलन के रूप में क्रियाशील रहती है।"

इस प्रकार ogburn and Nimkoff सामाजिक नियंत्रण को सामाजिक व्यवस्था बनाने के लिए दबाव का एक विधि माने हैं।

Scanned with Cam

पारसन्स के अनुसार" विपथगामी प्रवृत्तियों की करने की कुलक्का बनने से ही पहले कुचल देना सामाजिक नियंत्रण है।" यहाँ विपथगामी का अर्थ समाज विरोधी कार्य से है।

आजकल सामाजिक नियंत्रण का सम्पूर्ण समाज-व्यवस्था को नियमन से लिया जाता है जिसमें सामाजिक मूल्यों, आदर्शों और उद्देश्यों के अनुरूप व्यवहार एवं कार्य करने की प्रेरणा दी जाती है।

सामाजिक नियंत्रण की आवश्यकता एवं महत्व

आज सामाजिक मूल्य और सदस्यों की व्यवहार में समानता का होना आवश्यक है ताकि समाज का अस्तित्व एवं निरन्तरता बनी रहे, इसके लिए भारत में सामाजिक नियंत्रण की प्रयोजन महसूस किया जाता है। इस संदर्भ में सामाजिक नियंत्रण की आवश्यकता एवं महत्व नीचे दर्शाया जा रहा है:-

1. सुरक्षा की भावना:-
सामाजिक नियंत्रण का कार्य एक समाज के सभी सदस्यों को अधिकतम सुरक्षा प्रदान करना है। इस कार्य के लिए अनेक सामाजिक नियम एवं कानून बनाये जाते हैं ताकि व्यक्ति सीमा में रहकर सुरक्षापूर्ण कार्य करते रहें।

2. सामाजिक संगठन की स्थिरता:-
सामाजिक नियंत्रण व्यक्ति को प्रस्थिति तथा भूमिका में सन्तुलन बना कर कार्य की प्रेरणा देती है। फलतः व्यक्ति के मनमानी रुकता है तथा सामाजिक संगठन ठीक रहता है

3. परम्पराओं की रक्षा :-
परम्परा संस्कृति का धरोहर एवं रक्षक है जो व्यक्ति को पूर्वजों का अनुभव एवं ज्ञान नवीन पीढ़ी को जीवन द्वारा परिमार्जित करती है। जिसे सामाजिक नियंत्रण द्वारा जीवन के लिए बाध्य किया जाता है।

4. एकता की व्यापना :-
सामाजिक नियंत्रण द्वारा अनुशासित जीवन का विकास होता है फलतः समाज में विघटन एवं विपथगामी प्रवृत्तियों पर नियंत्रण प्रक्रिया लगाती है। फलतः समाज में परस्पर एकता की व्यापना होती है।

5. व्यवहारों पर नियंत्रण :-
एंडिल का अनुसार "मानव नियंत्रण के कारण ही मानव है" अर्थात समाज विरोधी व्यवहार पर नियंत्रण प्रतिबन्ध लगाता है जिससे स्वच्छन्द व्यवहार एवं मनमानी कामों को रोक कर सामाजिक नियंत्रण प्रजातांत्रिक व्यवहार को जन्म देता है।

6. सहयोग की व्यापना : सामाजिक नियंत्रण द्वारा समाज में संघर्ष एवं अनियंत्रित जीवन तथा विघटन को समाप्त किया जाता है। फलतः सामाजिक नियंत्रण समाज में सहयोग का अवसर प्रदान करता है।

7. सामाजिक मूल्यों की रक्षा :
सामाजिक नियंत्रण द्वारा समाज में मान्यता प्राप्त मूल्य और मानदंडों का विकास होता रहता है।

Scanned with CamScanner

8. व्यक्ति का मानवीकरण:
सामाजिक नियंत्रण से जन्मजात पशुवत प्रवृत्तियों को रोका जाता है और व्यक्तियों में वैधानिक एवं नैतिक मूल्यों का जन्म देकर, सदस्यों को समाज के अनुरूप बनाया जाता है। इस दृष्टिकोण से मानवीकरण की दिशा में, नियंत्रण का विशेष योगदान है।

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट होता है कि सामाजिक नियंत्रण का प्रमुख कार्य समाज में एकता, सुरक्षा, एवं मानवीय मूल्यों की स्थापना करना है।

Scanned with Cam